हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-4

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2304**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक : 250* *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04 / 13 July 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	4	5	8	1	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिंदी साहित्य के महान उपन्यासकार प्रेमचंद के गोदान नामक उपन्यास का है।

प्रसंग – मिस मालती और मिस्टर मेहता के बीच दार्शनिक वार्तालाप।

व्याख्या - मालती द्वारा अपने दर्शन पर आधारित बातों के माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों को समझाते हुए कहती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है कि मित्र बनना अधिक सुखकर है।, क्योंकि मुझे पता है तुम मुझसे प्रेम करते हो, मेरी रक्षा करोगे, मैं भी त्याग करने तैयार हूं परंतु मैं इस बंधन से अपने आप को बांधना नही चाहती हूं। मैं इस रिश्ते को स्वतंत्र अस्तित्व के साथ विकसित होने देना चाहती हूं।

विशेष - स्त्री पुरुष संबंध के आधुनिक विचारधारा का प्रस्तुतीकरण

- लिव-इन रिलेशनशिप जैसे नए विचारों की मान्यता
- सीधी-सरल भाषा
- कहीं-कहीं तत्सम शब्द - पथ प्रदर्शक, जीवन पर्यन्त

प्रासंगिकता - वर्तमान की मांग के अनुसार।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय है। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानों साक्षात् देवी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान उपन्यासकार प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' से लिया गया है।

प्रसंग - प्रस्तुत कथ्य में मालती द्वारा अपनी यथार्थवादी सोच का स्पष्ट वर्णन किया गया है।

व्याख्या - मालती कहती है आज का जमाना धन पर ही आधारित है। जिसके पास जितना अधिक पैसा है उसका उतना ही सम्मान है। अपवादत: ही धन को किसी आंदोलन के सामने झुकना पड़ा हो। मैं भी बात करती हूँ जब

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोई गरीब औरत आती है जो उसके प्रति मेरी प्रतिक्रिया उदासीन परन्तु जब कोई अमीर महिला आती है तो मैं उसके सम्मान हेतु स्वयं हाजिर रहती हूँ।

विशेष-

1) प्रेमचंद जी द्वारा सामाजिक आदर्शवाद के स्थान पर भौतिक यथार्थवाद का वर्णन किया गया है।

(2) आधुनिक नई सभ्यता में धन के महत्व को उजागर किया गया है।

(3) धन आधारित व्यवहार परिवर्तन और भेदभाव की स्वाभाविकता को दर्शाया गया है।

(4) भाषा सीधी, सरल है।

प्रासंगिकता- वर्तमान युग में भी दुनिया धनबल पर आधारित है जो न्याय समभावना को बढ़ा रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् सें, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिंदी साहित्य के महान निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है' से लिया गया है।

प्रसंग- प्रस्तुत कथन में कविता का संबंध विभिन्न परिस्थितियों से बताया गया है।

व्याख्या- शुक्ल जी कविता का महत्व बताते हुए कहते हैं कि कविता वर्णों का चित्र है जो संगीत को ध्वनि प्रदान करता है। ऐसा संगीत होता है जो भावनाओं से परिपूर्ण होता है। कविता में वह शक्ति होती है जो अंधकार में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रोशनी भर देती है, असत्य को सत्य में बदल देती है, स्थिर को गति प्रदान करती है और हमारे बाहरी जगत को हमारे आंतरिक मन से जोड़ती है। अतः कविता संवेदनशीलता का गुण उत्पन्न करती है।

विशेष-

(i) कविता के जीवन में महत्व को बताया गया है।

(ii) कविता द्वारा जीवन की गतिशीलता, आनंद, भावनाओं का व्यवहारिक रूप में परिवर्तन को दर्शाया गया है।

(iii) भाषा, तत्समी है।

(iv) काव्यात्मक भाषा शैली

(v) चेतनाप्रवाह शैली

प्रासंगिकता- वर्तमान समय भी, वैज्ञानिकता के साथ कविता का महत्व बना हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की महान रचना दिव्या से लिया गया है जिसके रचनाकार यशपाल है।

प्रसंग- उपरोक्त वचन मारीश का है।

व्याख्या- मारीश द्वारा व्यावहारिक दर्शन से प्रेरित धारणा, जिसमें जीवन को गतिशील बताया गया है। जिसमें सभी प्रकार की समस्याएं आती है। परन्तु यह क्रम निरन्तर चलते रहता है। यदि कोई बुरा वक्त आ भी जाये तो एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाना, सही निर्णय नहीं है।

विशेष-

- जीवन की गतिशीलता का वर्णन
- बौद्ध दर्शन से प्रेरित विचार
- जीवन दृष्टि के माध्यम से उत्साह वर्धन हेतु उपयुक्त
- तत्समी शब्दों का प्रयोग जैसे - तृषा, तृप्त

प्रासंगिकता - वर्तमान में बढ़ते सुसाइड, हिंसा, आदि जैसी समस्याओं के समाधान हेतु।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की; पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारू करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश एक दुनिया समानांतर की गुल्की बन्नो कहानी से लिया गया है।

प्रसंग - यह हरना जब गुल्की बन्नो का पति उसे लेने आता है और अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु गुल्की बन्नो को अपने साथ ले जाता है, तब की है।

व्याख्या - गुल्की बन्नो का पति अपनी दूसरी पत्नी और बच्चे की सेवा हेतु अपनी पहली पत्नी गुल्की बन्नो को लेने आता है। और पहले ही स्पष्ट कह देता है कि यह मेरे घर सिर्फ एक नौकरानी की भांति ही रहेगी न इसे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

बोलने की कभी स्वतंत्रता है और न ही कोई अधिकार है। अतः दो वक्त की रोटी खाकर, घर का सारा काम करके चुपचाप पड़े रहना ही, वरना कभी भी पिटाई हो सकती है।

विशेष-

(1) बेमेल विवाह को यथार्थवादी रूप में प्रदर्शित किया गया है।

(2) स्त्रियों की कुरूपा, दिव्यांगता आदि की सजा किस प्रकार उनके लिये अभिशाप होता है।

(3) भाषा सीधी सरल है। कहीं-कहीं देहाती ध्वन्यात्मक भाषा है।
उदा०- औरतिया।

विशेष- वर्तमान दौर में भी प्रायः दो पत्नियाँ होने पर बड़ी पत्नी को उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

हिन्दी साहित्य के विकास में मुंशी प्रेमचंद का महान योगदान रहा है। जिन्होंने साहित्य के अधिकांश विधाओं जैसे- कहानी, उपन्यास और निबंध में लेखन किया जिनकी प्रासंगिकता आज भी है।

प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों में समाज में व्याप्त सभी समस्याओं को शामिल किया गया है। जो तत्कालिक समाज की ही नहीं अपितु वर्तमान समाज की व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ी करती है। समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कुरियादी चिंताएँ

(1) वृद्ध वर्ग संबंधी - प्रेमचंद की बूढ़ी काकी कहानी में वृद्ध वर्ग की परिवार द्वारा उपेक्षा को बताया गया है। जो वर्तमान समय में और बड़े रूप में विद्यमान है।
इसी साधारण - चीफ की दावत कहानी इसे प्रासंगिक बनाती है।

(2) बेमेल विवाह की समस्या - प्रेमचंद की नया विवाह, चलायोझा, गोदान में भोला-नोहरी का विवाह बेमेल विवाह को दर्शाता है।
वहीं एक दुनिया समानांतर, नई कहानी में गुलकी बन्नो, टूटना, एक और जिंदगी इसी समस्या को उठाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(3) संयुक्त परिवार के टूटन की समस्या
चलायोझा, गोदान में (होरी और उसके भाइयों के बीच टूटन) आदि में संयुक्त परिवार के टूटने के विषय में बताया गया है।
यह समस्या आज भी बढ़ते शहरीकरण, आर्थिक बोझ के कारण बड़ी समस्या है।

(4) वंचित वर्गों का शोषण - दूध का दाम में मंगल, मुल्ली डण्डा में गया आदि संबंधी समस्या।

(5) किसानों की समस्या - सभ्यता का रहस्य, गोदान, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम आदि रचनाओं में किसानों पर लगान का बोझ ऋण की समस्या का वर्णन है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर | 15
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी वर्तमान में बढ़ती किसान आत्महत्या की घटनाओं पर उंगली उठाती है।

(6) दलित वर्ग संबंधी समस्याएँ

सद्गति, कफन, जैसी कहानियों और गोदान में सिलिया के माध्यम से दलित वर्गों से भेदभाव, छुआछूत की समस्या को उठाया गया है।

वही आज भी प्रवेशशुल्क जैसी उच्चवर्ग द्वारा दलित शोषण की समस्या को मुखर करता है।

इस प्रकार यह कहने में कोई संदेह नहीं कि प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों ने वर्तमान की समस्याओं को भी इसी ध्यान में रखा है। हो सकता है कि सभी समस्याएं जैसे साम्प्रदायिकता, महिलाओं शोषण न हो परन्तु प्रयास पुरा किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में कहानी विधा के विकास क्रम में नई कहानी आंदोलन की शुरुआत, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात प्रारम्भ हुआ था। जिसका कारण निम्न थे -

1) ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में रोजगार हेतु प्रवासन
2) शहर का अकेलापन और अजनबीपन
3) संयुक्त परिवारों का टूटन
4) स्त्री-पुरुष संबंधों में परिवर्तन
5) आर्थिक बोझ

आदि वातावरण ने नई कविता और कहानी लेखन की मांग को बढ़ाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

एक दुविधा समानांतर कहानी संग्रह में नई कहानियों को शामिल किया गया है। जिसमें खुई हुई दिशाएँ नामक कहानी कमलेश्वर द्वारा रचित है।

नई कहानी पर आधारित विशेषताएँ

(1) शहर का अजनबीपन - चंदर द्वारा शहर के कोलाहल में भी स्वयं को अकेला महसूस किया जाता है। वह कोई शांत जगह ढूंढता है परन्तु असमर्थ रहता है।

“ शांतिपूर्ण ध्यान भी मिलना मुश्किल थोड़े देर बैठो नहीं कि पुलिस की सिटी की आवाज शांति भंग कर देती है।”

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(2) परिचय की मांग - चंदर जब अपनी प्रेमिका के घर जाता है तो उसके व्यवहार परिवर्तन को देखकर गहरे दुख का अनुभव करता है।

“ जो मुझे इतने अच्छे से जानती है कितने बार मेरे लिये चाय बनायी है, उसके द्वारा पूछने पर चीनी कितनी डालूं। वह कुछ कह ही नहीं पाया।”

(3) पहचान का संकट - जब चंदर बस में सफर कर रहा होता है तो टिकट मास्टर को देख उसे लगता है कि वह उसे पहचानते है परन्तु पैसे कम देने की बात पर, उसके बदलते व्यवहार से वह दुखी हो जाता है।

“ किसी को दे दें यार आने इसे तो हर: सारे ही चलेंगे।”

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" कविता क्या है " नामक निबंध में आचार्य शुक्ल जी द्वारा मुख्यत: वैज्ञानिक शैली पर आधारित विचारात्मक निबंध लिखा गया है।

इस निबंध में मुख्यत: कविता का महत्व मानव जीवन में बताया है। किस प्रकार कविता हमारी भावनाओं, मनोदशाओं, आनंद, दु:ख को प्रस्तुत करने में सक्षम होती है।

रामचंद्र शुक्ल की काव्य दृष्टि

1) 'कविता क्या है' निबंध के माध्यम से शुक्ल जी ने अपनी काव्य दृष्टि को प्रस्तुत किया है जिसके तहत कविता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के लेखन में निम्न बातों का महत्व आवश्यक होना है।

1) भावना का सम्प्रेषण- कविता द्वारा भावनाओं का प्रस्तुतिकरण सहज और सरल होना चाहिये।

2) भाषा के स्तर में- कविता की भाषा सरल और बोधगम्य होनी चाहिये जो पाठक के लिये अर्थग्रहण हेतु सक्षम हो।

3) अलंकार की दृष्टि- रामचन्द्र शुक्ल अधिक अलंकारों के प्रयोग के विरोधी है।
उन्होंने उपमा अलंकार का प्रयोग किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5) चमत्कारवाद - शुक्ल जी कुहिदवे ऐंत वक्रता की बुराई करते है और भावनाप्रेरित वक्रता की स्वीकृति देते है।

6) मनोरंजन के आधार पर - कविता में हास्य, मनोरंजन के गुणों को स्वीकारते है। परन्तु अश्लीलता, देहमूलक मनोरंजन को नकारते है।

7) काव्यसौन्दर्य - काव्य सौन्दर्य हेतु सांस्कृतिक पहचान, ध्वन्यात्मकता, क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग को मान्यता।

इस प्रकार शुक्ल जी की काव्यदृष्टि ने मानक कविता लेखन को साहित्य में प्रस्तुत किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में नाटक विधा का आरंभ मुख्यतः भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधार मानकर माना जाता है। जिनमें भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश महान नाटककार है।

जहाँ एक ओर जयशंकर प्रसाद ने नाटक से अधिक रंगमंच को महत्व दिया वहीं मोहन राकेश ने साधारण मंच के माध्यम से नाटकों के प्रदर्शन को महत्व दिया और इसमें इन्हें महान सफलता हासिल भी हुई।

अतः मोहन राकेश ने रंगमंच हेतु नए विचार जिसे मौलिक रंगमंच कहते है, का विकास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आषाढ़ का एक दिन के आधार पर

(1) रंगमंचीय साज सज्जा हेतु कम संसाधनों के प्रयोग पर बल।

'आषाढ़ का एक दिन' में केवल कुछ ही साधनों जैसे- मल्लिका का घर, जिसमें बहुत कम वस्तुएं आदि से काम चल जाता है।

(2) कम दृश्यों का प्रयोग - आषाढ़ का एक दिन में केवल तीन ही दृश्य हैं जिससे मंचन में सरलता होती है और कम समय में ही सफल मंचन होना संभव है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) पात्रों की कम संख्या - मोहन राकेश के नाटकों में पात्रों की संख्या कम होती है जिससे दर्शकों को समझने में आसानी होती है।

(4) रंगमंचीयता हेतु समय - जहाँ जयशंकर प्रसाद के नाटकों के मंचन में लम्बा समय लगता वहीं, मोहन राकेश के नाटकों में बहुत कम।

(5) जटिल प्राकृतिक दृश्यों से बचना - आषाढ़ का एक दिन में केवल आषाढ़ की वर्षा का दृश्य ही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जिसका मंचन आसान है।

(6) साधारण और सरल भाषा

मोहन राकेश द्वारा आषाढ़ का एक दिन में पृष्ठभूमि इतिहास की है परन्तु भाषा वर्तमान युग की खड़ी बोली, कहीं तत्समी परन्तु बोधगम्य है।

इस प्रकार मोहन राकेश द्वारा नाटक के क्षेत्र में किये गये नवाचारों ने नाटक के मंचन को सरल व आसान बनाया और एक नए मौलिक मंच का आविष्कार किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद द्वारा कहानी विधा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया गया है। उनके द्वारा 300 से भी अधिक कहानियाँ लिखी गई।

मनोवैज्ञानिक कहानियों का लेखन मुख्यतः प्रसाद, अज्ञेय, जैनेन्द्र आदि कहानीकारों से माना जाता है। परन्तु प्रेमचंद द्वारा इसकी शुरुआत पहले ही हो चुकी थी जिसमें उन्होंने सामाजिक वर्गों के मनोविज्ञान को अपनी कहानियों में उकेरा है, न कि व्यक्ति विशिष्ट के मानसिक द्वंद्व के मनोविज्ञान को।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

① नारी मनोविज्ञान के संदर्भ में

→ रूप और सौन्दर्य में चोली-दामन का रिश्ता होता है। (मलायोमा)

→ आँसु तो स्त्रीयों की आंखों में ही रहते है। (बड़े घर की बेटी)

पन्ना की बाते सुनकर मूलिया का पीतसा बदन जगमगा उठा।
(मलायोमा)

निम्न उदाहरणों के माध्यम से नारी के मनोविज्ञान को समझा जा सकता है।

② दलित मनोविज्ञान के संदर्भ में

कफन, सद्गति के माध्यम से प्रेमचंद ने दलितों के मनोग्रंथि का वर्णन।

"बड़े पवित्र होते है ये पण्डित जान तभी तो लोग पूजते है।" (सद्गति)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"गोंड ने चमरौने में जाकर कह दिया खबरदार जो मुर्दा उठाया तो दिल्लगी जो जब मन हुआ कर दिया, पहले तहकीकात होगी।" (सद्गति)
दलित वर्ग की चेतना को दर्शाया है।

③ बच्चों का मनोविज्ञान - ईदगाह कहानी में बच्चों के बीच देश की समस्याओं पर वाद-विवाद के माध्यम से।

"अरे मिया ये पुलिस वाले ही चोरी करवाते है।"

④ वृद्ध वर्ग के मनोविज्ञान को - बूढ़ी काकी, और ईदगाह कहानी में।

"बुढ़ापा, बचपन का पुनरागमन होता है।"

ॽ बूढ़ी अमीना ने बच्ची अमीना का पात्र खेला और बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' – विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य के महान व्यंग्यकार ~~हरिशंकर परसाई~~ हरिशंकर परसाई द्वारा 'भोलाराम का जीव' कहानी का लेखन का मुख्य उद्देश्य भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, लेटलतीफी, रिश्वतखोरी और शोषणपरक नीति का पर्दाफाश किया गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान देश तो आजाद हो गया परन्तु जिस तरह अंग्रेजों द्वारा अभिजात्यवादी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रशासन हमें विरासत में दी गई है जिसमें अधिकारी और सेवा प्राप्तकर्ता के बीच बड़ा अंतराल विद्यमान है।

भोलाराम का जीव के माध्यम से

(1) नौकरी मुक्त कर्मचारियों के प्रति उदासीनता, सामाजिक सुरक्षा हेतु पेंशन के लिये कार्यालयों के चक्कर काटना, आज भी प्रशासन की असंवेदनशीलता को उजागर करती है।

"जब से नौकरी से बैठे हैं साहब एक महीने की भी पेंशन नहीं मिली।"

(भोलाराम की पत्नी)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) ~~काम~~ फाइल को आगे बढ़ाने हेतु रिश्वत की मांग।

"इस फाइल पर वज़न रखना होगा वरना यह उड़ जायेगी।"

(3) सरकारी कार्यालयों में कार्य के प्रति उदासीनता, लालफीताशाही की संस्कृति को दर्शाती थी।

"महीनों से चक्कर काट रहा था, कभी इस ऑफिस, कभी उस ऑफिस परन्तु फाइल आगे बढ़ी ही नहीं थी।"

इस प्रकार, भोलाराम का जीव कहानी कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार की नीति को उजागर करने में सक्षम कहानी थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) गुलाबराय के निबंध भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

संदर्भ- प्रस्तुत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के उपन्यास~~नाटक~~ विधा के महान ~~नाटककार~~ उपन्यासकार ~~जयशंकर प्रसाद~~ यशपाल के ~~स्कन्दगुप्त~~ दिव्या नाटक से है।

प्रसंग - यशपाल ने अपने दिव्या उपन्यास में पैन्थ के माध्यम नारी के प्रति मध्यकालीन सोच को उजागर किया है।

व्याख्या - पैन्थ अपने पुत्र पृथुसेन को समझाते हुए कहता है कि पुत्र मैंने इस दास शब्द के कलंक को हटाने में कई प्रयत्न किये हैं। और तुम एक युवती के कारण सब बर्बाद करना चाहते हो। स्त्री केवल भोग्य की वस्तु है। स्त्री के लिये बलिदान करने की कोई आवश्यकता नहीं है अपितु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ऐसी परिस्थिति में अपनी बुद्धि को सही दिशा में लगाकर करना चाहिये।

विशेष - 1) मध्यकालीन नारीवादी चिंतन जिसमें नारी को भोग्य वस्तु और त्याज्य माना गया था।

2) नारी के समाज में निम्न स्थिति के कारण विद्या के माध्यम से समस्याओं का चित्रण।

3) भाषा, परिवेशानुसार है।

4) तत्सम, संस्कृत भाषा का प्रयोग

प्रासंगिकता - (1) वर्तमान में भी नारी के साथ सामाजिक, आर्थिक भेदभाव की समस्या विद्यमान है।

(2) महिलाओं को त्याज्य वस्तु मानना, घरेलू हिंसा, दहेज प्रताड़ना, तलाक जैसी समस्याएँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिंदी साहित्य की निबंध विधा से लिया गया है। जो शुक्ल जी के 'श्रद्धा भक्ति' निबंध से लिया गया है।

प्रसंग - जीवन में कर्म के महत्व को उजागर किया गया है।

व्याख्या - शुक्ल जी का मत संसार में शान्ति की स्थापना हेतु तटस्थता के स्थान पर सक्रिय रूप से समस्या के समाधान हेतु भागीदारी की अपेक्षा की गई है। ईश्वर के उपदेशों के स्थान पर, कर्मशील जीवन के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उद्धार को महत्व दिया गया है।

विशेष -

- श्रद्धा-भक्ति निबंध में भक्ति हेतु कर्म को अधिक महत्व दिया गया है।
- समाज सुधार हेतु सक्रिय भागीदारी के महत्व को प्रदर्शित किया गया है।
- तत्समी भाषा का प्रयोग। जो निबंध के अनुरूप है।

उदा० सात्विक, कर्मसौन्दर्य

प्रासंगिकता

वर्तमान में बढ़ते मॉब लिंचिंग, हिंसा पूर्ण भाषण, साम्प्रदायिक दंगों से निपटने हेतु सहायक विचार।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और..।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान उपन्यासकार प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास गोदान से लिया गया है।

प्रसंग - यह अंश उपन्यास के अंत का है जब होरी के प्राण जाने वाले थे और वह पुरानी स्मृतियों को याद कर रहा था।

भावार्थ - होरी जब अपने जीवन की अंतिम साँसे ले रहा था तब उसे अपने बचपन के दिन याद आते हैं कैसे वह खेला करता था, अपनी माँ की गोद में, फिर गोबर, फिर धनिया, लाल चुंदरी पहनी हुई उसे भोजन परोस रही है। और अन्त में उसकी सबसे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

बड़ी इच्छा जो पूरी न हो पायी थी परन्तु अंत तक उसके मन में थी। एक गाय का चित्र उसके सामने आता जिसका दूध वह दुह रहा है जैसे ही वह अपनी नाती को पिलाता है तो वह देवी बनकर गायब हो जाती है।

विशेष-

1) प्रस्तुत गद्यांश में केवल होरी ही नही अपितु अधिकांशतः किसानों की स्थिति का वर्णन है।
2) किस प्रकार खाद्यान्न उपजाने वाले के ही घर में गरीबी है कि अभावों में ही जिन्दगी कट गई।
3) बिम्बात्मक शैली का प्रयोग
4) सीधी, सरल भाषा

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी अधिकांश किसानों द्वारा आत्महत्या की मामले किसानों की समस्या को उजागर करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

मैला आँचल हिन्दी साहित्य की आंचलिक उपन्यासधारा का महान आंचलिक उपन्यास है जिसके लेखक फणिश्वरनाथ रेणु जी हैं।

आंचलिक उपन्यास की प्रमुख विशेषताओं में भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विशेषताओं को शामिल किया जाता है जो स्थान विशेष का सजीव चित्रण करती हो।

सांस्कृतिक विशेषताओं के प्रभाव से ही भाषा का विकास होता है। आंचलिक उपन्यास में उस अंचल की ग्रामीण, देहाती भाषा को ही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यास में शामिल किया जाता है जिसमें कोई मिलावट नहीं होती है।

मैला आँचल की भाषा शैली

(1) ग्रामीण परिवेश के अनुसार देशज और देहाती शब्दों का प्रयोग किया गया है।

उदाहरण - गमकउआ साबुन
धमाधम

(2) अंग्रेजी भाषा के शब्दों का ग्रामीण परिवेश में आकर किस तरह परिवर्तन होता है।

उदाहरण - वायसचैयरमैन - भैंसचरमन
हॉस्पिटल - असपिताल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) ग्रामीण वातावरण के कारण भाषा में ध्वन्यात्मकता, काव्यात्मकता शामिल होती है।

उदाहरण - धा धिन धा
धिना धिन्ना धा

(4) मैला आँचल की भाषा में 'मुहावरों' और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया गया है।

(5) कुछ शहरी पात्रों जैसे प्रशांत द्वारा शुद्ध हिन्दी और तत्सम शब्दों का भी प्रयोग है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

'यही सच है' कहानी हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'एक दुनिया समानांतर' ले ली गई है। जिसकी लेखिका महान कहानीकार मन्नू भण्डारी है।

'यह सच है' कहानी की शिल्प योजना में कहानी के कथा का अभाव स्पष्ट है। इस कहानी में यथार्थवादी मानसिक द्वन्द्वों का स्पष्ट वर्णन है। किस तरह आज का भौतिकवादी युग प्रेम, सामाजिक सुरक्षा को अधिक महत्व देता है परन्तु साथ ही अवसरवादिता भी दिखाई देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प योजना

(1) भाषा शैली - 'यह सच है' कहानी शहरी युवा वर्ग पर आधारित कहानी है अत: अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हिन्दी के साथ दिखाई देता है।

जब संजय द्वारा दर्शन की बात की जाती है तो तत्सम शब्दों का प्रयोग भी होता है।

→ सूत्र शैली युक्त भाषा का प्रयोग साथ ही चेतना प्रवाह शैली का भी प्रयोग है। जो मानसिक द्वन्द्वों का वर्णन करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(2) चरित्र योजना - चरित्र शहरी वर्ग के हैं। जो मानसिक उलझनों से पीड़ित है। कहानी में पात्रों की संख्या बहुत कम है।

चरित्र स्वाभाविक और यथार्थवादी है।

(3) कथानक योजना - कहानी तिथियों के अनुसार आगे बढ़ती है। अत: यह एक तिथि प्रधान कहानी है।

परिस्थितियों के अनुसार, व्यक्ति के मानसिक प्रश्नों और द्वन्द्व को दर्शाया गया है जिससे कथानक में जटिलता दिखाई देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेंद्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी आंदोलन की शुरुआत स्वतंत्रताप्राप्ति के पश्चात शहरी मध्यवर्ग के द्वारा हुई जिसमें वे वर्ग शामिल थे जो शहरी अकेलेपन और अजनबीपन से स्वयं को मानसिक तनावों के कारण अकेला महसूस करते थे।

आर्थिक बोझ, कम आय के कारण परिवार का टूटना, स्त्री-पुरुष संबंध-विच्छेद जैसी समस्याओं में वृद्धि हो रही थी। स्त्री शिक्षा के बढ़ने से स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धि हुई थी।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नई कहानी के आधार पर टूटना

टूटना, नाक दुविधा समानांतर कहानीसंग्रह के ~~सम्पादक~~ राजेन्द्र यादव की ही कहानी संकलनकर्ता है।

1) प्रतीकों का अत्यधिक प्रयोग -

टूटना कहानी की शुरुआत ही प्रतीकों के माध्यम से हुई है।

उदाहरण - पंजा लड़ाते हुए व्यक्तियों का दृश्य

(2) शहरी मध्यवर्गीय समुदाय की भाषा

- अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग.
- खड़ी बोली, तत्समी शब्द बीच बीच में

(3) स्त्री-पुरुष संबंध का टूटन

कहानी के नायक-नायिका के बीच

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व्यवहारिक अंतराल के कारण संबंध कमजोर रहता है। जिसके कारण तलाक जैसे निर्णय आसानी से ले लिये जाते है।

(5) परिवार का विच्छेदन - इस कहानी में विश्वास की कमी के कारण गृहस्थी का सुचारू रूप से संचालन नही हो पाता है और परिवार बिखर जाता है।

(6) ~~[illegible]~~ अजनबीपन और अकेलापन

पति-पत्नी के अलग होने बाद दोनों ही एक-दूसरे को याद करते है परन्तु अभिमान होने के कारण बात नही करते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation